Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 12/April/2025 **IJRAW:** 2025; 4(5):174-177 **Accepted:** 19/May/2025

मुंशी प्रेमचंद के कहानियों में सामाजिक संचेतना

*[1]डॉ. मिथलेश सिंह राजपूत

*[1]सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ.सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

मुंशी प्रेमचंद जी ने कथा–साहित्य के सामाजिकता पर विशेष जोर दिया है उन्होंने अपनी कृतियों के द्वारा समाज के दबे कुचले लोगों की समस्याओं पर प्रकाश डाला, ईस क्षेत्र में वे प्रगतिशील लेखकों के श्रेणी में अग्रणी माने जाते हैं । वह जिंदगी भर ऐसे बहुत से राह भटकों को रास्ता दिखाते रहे उनके अनुसार समाज में आर्थिक समानता होनी चाहिए। सदा पूंजीवाद व्यवस्थावाद की घोर निंदा करते रहे उनका मानना यह भी था कि प्रत्येक को श्रम करना चाहिए उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में वर्ण व्यवस्था की कड़ी निंदा की है उन्होंने सामाजिक दायित्व को सफलतापूर्वक निभाया है।

मुख्य शब्दः कथा–साहित्य, मुंशी प्रेमचंद, सामाजिक संचेतना।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद की कथा साहित्य में नया आयाम प्रस्तुत करने वाला रचनाकार रहे हैं कथा सम्राट प्रेमचंद जी का साहित्यिक संसार बहुत व्यापक है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिकता पर विशेष जोर दिया है। सामाजिक परिस्थितियों में प्रेमचंद जी के साहित्य का मेरूदण्ड रहे है। उनके कहानियों के साधारण विषयों पर तत्कालीन राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षार्थ जनक्रांति को अपेक्षित समन्वित शक्ति प्रदान करने वाले दिव्य भावों का सन्निवेश हुआ है। इस प्रकार उनके कहानियों पर अनेक मानवतावादी साहित्यकार होने की पूरी छाप पड़ी है। शाश्वत राष्ट्रीय सामाजिक मूल्यों के तलाश के प्रति विशेष रूप से सजक होने के कारण उनके कहानी आज भी प्रासंगिक है। सामाजिक जीवन के प्रत्यक्ष यथार्थ को चित्रित करने के लिए प्रेमचंद की दृष्टि समाज के हर क्षेत्र पर केंद्रित हुई। इसलिए प्रेमचंद की कहानियों में केवल जवान स्त्री–पुरुष ही नहीं बच्चे और बूढ़े, अमीर और गरीब, गवार और बुद्धिमान, किसान और साहूकार सब प्रकार के समाज के पहलू का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग हैं। उन्होंने जिस सामाजिक परिवेश को अपनी अनुभूति का क्षेत्र बनाया वह परिवेश जीवन की भली–बुरी रूड़ियो से भरा हुआ है। यह रुड़ियां कहीं धर्म का सहारा लेकर कर्मकांड का रूप ले लेती है तो कहीं कृत्रिम प्रतिष्ठा का सहारा लेकर सर्वसाधारण जनजीवन को निचोड़े जा रही है। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में झूठे आदर्श का भंडाफोड़ना चाहते हैं और उसकी जगह नए आदर्श को पुनः स्थापना करना चाहते हैं उनकी दृष्टि से सामाजिक आदर्श वह है जहां मानवता के शाश्वत मूल्य की पहचान होती है।

मुंशी प्रेमचंद के कहानियों में सामाजिक संचेतना

मुंशी प्रेमचंद के कहानियों में सामाजिक संचेतना निम्नानुसार है–

मानवीय मूल्यः प्रेमचंद जी का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। जिन्होंने भारतीय जीवन की वास्तविकता को उनके निकट से झांक कर देखने का प्रयत्न किया और उनका देखा हुआ दीन–दुखी, दुर्बल, प्राचीन रुढ़ियों एवं परंपराओं से जर्जरित तथा नवयुग के जन जागरण से अपरिचित समाज ही भारत का वास्तविक समाज था। परंतु प्रेमचंद ने जिस समय साहित्य में अपने प्राण रूप में प्रवेश किया, उस समय तक देश के अंदर नवजागरण की हल्की सी लहर फैलनी आरंभ हो गई थी, जिसका प्रभाव उनके उपन्यासों में स्पष्ट लक्षित होने लगा। प्रेमचंद जी ने भारतीय जीवन तथा उसके दलित समाज को देखकर उसका तथा तथ्य चित्रण मात्र ही नहीं कर दिया बल्कि इस हिन स्थिति के मूल कारण को जानने के लिए गंभीर

***Corresponding Author:** डॉ. मिथलेश सिंह राजपूत

चिंतन को भी उन्होंने अपनी कृतयों में स्थान दिया है। अपने साहित्य के द्वारा वे मानव समाज में दम घुटने वाले वातावरण से किसी प्रकार हटकर पवित्र स्वच्छ वायु में सांस ले सकें, वे जीवन को उसके रूप में केवल देखना ही नहीं चाहते थे, बल्कि जीवन का एक रूप उनकी आंखों के सामने नाचता रहता था। जिस आदर्श रूप तक वर्तमान समाज को पहुंचा देने की प्रेरणा अपने साहित्य के द्वारा वह प्रदान करना चाहते थे। उनके सामने जीवन कैसा है, यह समस्या उतनी बड़ी नहीं थी जितनी कि जीवन को कैसा होना चाहिए।[1]

यही कारण है कि प्रेमचंद की दृष्टि यथार्थ होते हुए भी आदर्श की ओर उन्मुख थी। स्पष्ट है कि वह किसी साहित्यिक प्रवृत्ति विशेष के प्रति दुराग्रही ही नहीं थे। वे सहज भाषा से युगीन भाव बोध को अपनाकर अपने ढंग से नव सामाजिक निर्माण की प्रेरणा देने में सतत् क्रियाशील रहे। वे अपने समाज को जैसा कि उपन्यास साहित्य में उन्होंने कल्पना की है, मूर्त रूप में देखना चाहते थे।

सांप्रदायिकता

मुंशी प्रेमचंद जी ने सांप्रदायिकता सौहार्द को बनाए रखने के लिए अपनी अनेक कहानियों में सांप्रदायिक झगड़े की बुराई और परिणामों का उल्लेख किया है।

1. मुक्तिधाम, क्षमा (मानसरोवर–3)
2. स्मृतिका, पुजारी (मानसरोवर–4)
3. मंत्र, हिंसा परमो धर्म (मानसरोवर–5)
4. जेहाद (मानसरोवर–6)
5. ब्रह्म का स्वांग तथा खून सफेद (मानसरोवर–8)

यह ऐसी कहानियां है जिसके माध्यम से प्रेमचंद जी ने सांप्रदायिक वैषम्य के स्वर को दूरदराज तक पहुंचाने की कोशिश की है।

- 'मंत्र' कहानी में उन्होंने एक ऐतिहासिक घटना को माध्यम बनाया की जब 1920–22 ई. में हिंदू मुस्लिम एकता स्थापित हुई तो चारों तरफ लोग खुश हो गए। लेकिन यह खुशी ज्यादा दिनों तक न रह सकी क्योंकि इसको भंग करने की साजिश ब्रिटिश शासकों के द्वारा होने लगी वह भंग भी कर दिया गया।
- 'मुक्तिधाम' रहमान के द्वारा गाय के प्रति प्रेम दिखाकर हिंदू मुस्लिम सौहार्द बनाए रखने का प्रयास किया गया है। 'हिंसा परमो धर्म' के माध्यम से धर्म के नाम पर सारे देश में फैली ऐसी अराजकता को प्रस्तुत किया है जिसके सुनने या पढ़ने से दिल तार–तार होने लगता है। वे कहते हैं कि सत्य, अहिंसा, प्रेम तथा न्याय धर्म से गायब होने लगे थे। हर तरफ असत्य, हिंसा और द्वेष ही छा गया था। इन सब का कारण वह ब्राह्मणों और मौलवियों को मानते थे। उनके ख्याल से ऐसे लोगों ने अपने स्वार्थ को साधने के लिए धर्म का प्रयोग शुरु कर दिया है। वह मानते थे कि सभी धर्म को तिलांजलि देकर मानव–धर्म को अपनाया जाए। जिसमें प्रेम, अहिंसा और एक दूसरे के दुख दर्द को समझने और बांटने का पूरा अवसर हो। उनका कहना था कि उस मजहब या धर्म के सामने माथा झुकाने से क्या लाभ मिलेगा जिस धर्म में निष्क्रियता ने घर कर लिया हो जो धर्म केवल अपने को ही जीना सिखाता हो।

इस महान् साहित्यकार ने सदा मानव धर्म को ही शीर्षस्थ स्थान प्रदान किया। उनके अनुसार इस धर्म के अंतर्गत मनुष्य का मनुष्य रहना अनिवार्य है। परोपकार के लिए कुछ त्याग भी करना पड़े तो वह आत्मा की हत्या नहीं है। प्रेमचंद जी के जीवन दर्शन का मूल तत्व मानवतावाद है। वह मानवतावाद को सबसे पहले मानते थे। वही मानवतावाद जो मनुष्य की तरफदारी करने वाला हो।

शोषण

प्रेमचंद जी और शोषण का बहुत पुराना रिश्ता माना जा सकता है। क्योंकि बचपन से ही शोषण के शिकार रहे प्रेमचंद जी इससे अच्छी तरह वाकिफ हो गए थे। समाज में सदा वर्गवाद व्याप्त रहा है। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति को किसी न किसी वर्ग से जुड़ना ही होगा। प्रेमचंद ने वर्गवाद के लिखने के लिए ही सरकारी पद से त्यागपत्र दे दिया था। वह इससे संबंधित बातों को उन्मुख होकर लिखना चाहते थे। उनके मुताबिक वर्तमान युग न तो धर्म का है और ना ही मोक्ष का। अर्थ ही इसका प्राण बनता जा रहा है। आवश्यकता के अनुसार आर्थोपार्जन सबके लिए अनिवार्य होता जा रहा है। इसके बिना जिंदा रहने में जितनी कठिनाइयों का सामना लोग करेंगे उतना ही वहां गुनाह होगा। अगर समाज में लोग खुशहाल होंगे तो समाज में अच्छाई ज्यादा होगी और समाज में गुनाह नहीं के बराबर होगा। प्रेमचंद जी ने शोषित वर्ग के लोगों को उठाने का हर संभव प्रयास किया। उन्होंने आवाज लगाई ''ए लोगों जब तुम्हें संसार में रहना है तो जिंदो की तरह रहो, मुर्दों की तरह जिंदा रहने से क्या फायदा।'' प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में शोषक समाज के विभिन्न वर्गों की करतूतो व हथकण्डों का पर्दाफाश किया है। यह निम्नलिखित है– ग्राम एवं नगर के महाजन–

1. सामंतवाद के प्रतिनिधि–जमींदार
2. पूंजीवाद के प्रतिनिधि–उद्योगपति
3. सरकारी अर्धसरकारी–अफसर

उन्होंने अपनी कहानियां ''पूस की रात'' (मानसरोवर–1) नशा, पछतावा (मानसरोवर–6) जेल (मानसरोवर–7) बेटी का धन, बलिदान, विध्वंस तथा उपदेश (मानसरोवर–8) ''नशा'' कहानी में जमींदार को हिंसक पशु और खून चूसने वाली जोंक और वृक्ष की चोटी पर फूलने वाला बुंआ कहा है और यह कहा है कि ईश्वर ने आसामियो को इनका काम करने और सेवा करने के लिए ही पैदा किया है।

''पूस की रात'' का 'हलकू' उस किसान का प्रतीक है जो सब को खिलाता और पहनाता है मगर स्वयं रात जाड़े में

नंगे ठिठूरने पर मजबूर है। मजदूरी करके हलकू अपनी माल–गुजारी भरता है। इस प्रकार के बहुत से किसान है जो मजदूरी करके माल–गुजारी भरा करते हैं। उनकी हालात पर कोई तरस नहीं खाता है। हर कोई अपने–अपने वर्ग के लिए मरता है। पूस की रात कहानी कुछ पंक्तियां इस प्रकार है– हलकू–आज और जाड़ा खा ले, कल से मैं यहां पुआल बिछा दूंगा, उसी में घुस कर बैठना, तब जाड़ा ना लगेगा।

झबरा ने अपने पंजे उसकी घुटनों पर रख दिए और उसके मुंह के पास अपना मुंह ले गया। हलकू को उसकी गर्म सांस लगी। चिलम पीकर हलकू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा की चाहे कुछ हो अबकी तो सो जाऊंगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कंपन होने लगा। कभी इस करवट लेता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भांति उसकी छाती को दबाए हुए था। जब किसी तरह ना रहा गया तो उसने झबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपा कर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी पर वह उसे अपनी गोद से लिपटे हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था जो इधर महीनों से उसे ना मिला था। झबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है और हलकू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था जिसने आज उसे इस दशा को पहुंचा दिया। नहीं इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक एक अणु प्रकाश चमक रहा था।

झबरा अपना गला फाड़ डालता हां नीलगाय खेत का सफाया किए डालती थी और हलकू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भांति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था। उसी राख के पास गर्म जमीन वह चादर ओढ़ कर सो गया। सवेरे जब उसकी नींद खुली तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी क्या आज सोते ही रहोगे तुम यहां आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया। हलकू ने उठकर कहा क्या तू खेत से होकर आ रही है? मुन्नी बोली हां सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला ऐसे भी कोई सोता है तुम्हारे मडैया डालने से क्या हुआ?हलकू ने बहाना किया मैं मरते–मरते बचा तुझे अपने खेत की पड़ी है पेट में ऐसा दर्द हुआ कि मैं ही जानता हूं।

दोनों फिर खेत की डांड पर आए देखा सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और झबरा मुहैया के नीचे चित लेटा है। मानो प्राण ना हो। दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी। पर हलकू प्रसन्न था। मुन्नी ने चिंतित होकर कहा अब मंजूरी करके मालगुजारी भरनी पढ़ेगी। हलकू ने प्रसन्न मुख से कहा रात की ठंड में यहां सोना पड़ेगा।

नारी संचेतनाः

प्रेमचंद जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को सामाजिक विष कहा है। इसकी निदा के लिए कई कहानियों की रचना की

- सुभागी, लांछन (मानसरोवर–1)
- उन्माद (मानसरोवर–2)
- नैराश्य लीला (मानसरोवर–3)

आदि कहानियों में बाल–विवाह के दुष्परिणामों पर उन्होंने छींटे कसे है। इन कहानियों में उन्होंने ऐसे चरित्र प्रस्तुत किए हैं जैसे सुभागी 11 साल की उम्र में ही विधवा हो जाती है और नैराश्य लीला की कैलासकुमारी का अभी गवना भी नहीं होता है कि वह विधवा हो जाती है। इसके बारे में उन्होंने एक जगह लिखा है कि ''पाँच साल के दूल्हे तुम भारत के सिवा और कहीं देखने को नहीं मिलेंगे।''

''नैराश्य लीला'' की मुख्य पात्र कैलासकुमारी नारी चेतना का प्रतीक है जिसने रूढ़िवादी परंपरा का विरोध किया तथा अपने आत्म सम्मान की रक्षा की। कैलासकुमारी के उक्त कथन से यह बात स्पष्ट होती है–कैलासकुमारी अब तक यह व्रत रहती आई थी, अबकी उसने निश्चय किया, मैं व्रत ना रहूंगी, मां ने सुना तो माथा ठोक कर बोली– बेटी, यह व्रत रखना धर्म है।

कैलासकुमारी–पुरुष भी स्त्रियों के लिए कोई व्रत रखते हैं?

जागेश्वरी–मर्दों में इसकी प्रथा नहीं है।

कैलासकुमारी–इसलिए न कि पुरुषों को स्त्रियों की जान इतनी प्यारी नहीं होती जितनी स्त्रियों को पुरुषों की जान?

जागेश्वरी–स्त्रियां पुरुषों की बराबरी कैसे कर सकती है? उनका तो धर्म है अपने पुरुष की सेवा करना।

कैलासकुमारी–मैं इसे अपना धर्म नहीं समझती मेरे लिए अपनी आत्मा की रक्षा के सिवा और कोई धर्म नहीं।

लागेश्वरी–बेटी गजब हो जाएगा दुनिया क्या कहेगी?

कैलासकुमारी–फिर वही दुनिया? अपनी आत्मा के सिवा मुझे किसी का भय नहीं।

उपरोक्त कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि आत्म–सम्मान का भाव जागृत हुआ है या नैराश्य की क्रूर क्रीडा है? धन हीन प्राणी को जब कष्ट निवारण का कोई उपाय नहीं रह जाता तो वह लज्जा को त्याग देता है। निसंदेह नैराश्य ने यह भीषण रूप धारण किया है। सामान्य दशाओं में राष्ट्रीय अपने यथार्थ रूप में आता है पर गर्व शील प्राणियों में वर परिमार्जित रूप ग्रहण कर लेता है। यहां पर हृदयगत कोमल भावों का अपहरण कर लेता है चरित्र में अस्वाभाविक विकास उत्पन्न कर देता मनुष्य लोग लाज और उपहास की ओर उदासीन हो जाता है नेत्रिक्वन्न धन दूर जाते हैं यह नैराश्य की अंतिम अवस्था है।

नारी शिक्षा

नारी शिक्षा की दिशा में प्रेमचंद की अवधारणा यह थी कि स्त्रियों को शिक्षित किया जाए और उनको वह सभी

अधिकार दिए जाएं जो पुरुषों को प्राप्त हैं। अधिकार दिए जाने के साथ–साथ उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें ऐसी कोई पाश्चात्य पद्धति में ना जाने दिया जाए जिससे वह विलास बन जाए और अपने कर्तव्य से विमुख हो जाए। उन्होंने विलासिता को बुरा नहीं कहा बल्कि राजनीतिक दृष्टि से पराधीन तथा आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए भारत के युवकों और युवतियों का अपने देश और समाज की स्थिति को भूलकर अंग्रेजी पद्धति की नकल करना प्रेमचंद जी दृष्टि से उन्हें क्षुब्ध करता है।

विधवा विवाह

प्रेमचंद जी के ख्याल से विधवा विवाह समाज के लिए एक अच्छा काम था। इससे सामाजिक बुराइयों को मिटाया जा सकता था। वह कहते थे कि विधवा विवाह समाज के लिए आदर्श है। उनके शब्दों में मैंने एक बोया हुआ खेत लिया तो क्या उसकी फसल को इसलिए छोड़ दूंगा कि उसे किसी दूसरे ने बोया था। वह मानते थे कि वह व्यक्ति जो विधवा से विवाह करता है और पति के दायित्वों का जिम्मेदारी समझकर निभाता है वह समाज के लिए आदर्श है।

नारी राजनीतिक संचेतना

प्रेमचंद जी ने अनेक ऐसी कहानियां लिखी जिनका संबंध राजनीतिक चेतना से है। इनमें कुछ निम्नलिखित है–

- अनुभव, तावान (मानसरोवर–1)
- कुत्सा, दमूली का कैदी (मानसरोवर–2)
- माता का हृदय, धिक्कार, लैला (मानसरोवर–3)
- सती (मानसरोवर–5)
- राजा हदौली, रानी सारंधा, जुगनू की चमक (मानसरोवर–6)
- जेल, पत्नी से पति, शराब की दुकान, समर यात्रा, सुहाग की साड़ी (मानसरोवर–7)
- आहुति
- होली का उपहार
- सती

आदि कहानियों के चरित्र उभार कर प्रेमचंद ने नारी जाति में राष्ट्रीय चेतना उभारने का विशेष प्रयास किया सती कहानी एक ऐसी कहानी है जिसे नारी जाति में राष्ट्रीय चेतना जगाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी माना गया है। गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन में नारियों के सहयोगऔर जवान युवक–युवतियों के मन तरंगित हो रही राजनीतिक चेतना के अनुभव को प्रेमचंद ने अपनी कहानी में प्रस्तुत किया है।

रूढ़िवाद का विरोध

जिस समय प्रेमचंद का जन्म हुआ वह युग सामाजिक धार्मिक रूढ़िवाद से भरा हुआ था। इस रूढ़िवाद से स्वयं प्रेमचंद जी भी प्रभावित हुए। जब उनके कथा साहित्य का सफर शुरू हुआ अनेकों प्रकार के रूढ़िवाद से ग्रस्त समाज को यथाशक्ति कला के शस्त्र से मुक्त कराने का संकल्प लिया। अपनी कहानी बालक (मानसरोवर भाग–2) के माध्यम से यह घोषणा करते हुए कहा है कि ष्मैं निरर्थक रूढ़ियों और व्यर्थ के बंधनों का दास नहीं हूं।

उपसंहार

निसंदेह प्रेमचंद आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी साहित्यकार है, जिनकी प्रत्येक रचना चाहे वह उपन्यास हो, कहानी हो या नाटक हो भारतीय जन–जीवन का आईना है तथा हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि भी। मुंशी प्रेमचंद जी की दृष्टि ग्रामीण जीवन को लेकर बिल्कुल साफ होती है। वे अपने कहानी–संग्रह श्प्रेमपीयूष की भूमिका में ग्रामीण जीवन को भारतीय राष्ट्रीय जीवन से जोड़ते हैं तथा साहित्य में उसके चित्रण की हिमायत करते हैं । मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने कथा–साहित्य में सामाजिकता पर विशेष जोर दिया। आपने अपनी कृतियों के द्वारा समाज के दबे कुचले लोगों की समस्याओं पर प्रकाश डाला इस क्षेत्र में आप प्रगतिशील लेखकों के उस्ताद माने जाते हैं। वह जिंदगी भर ऐसे बहुत से राह भटको को रास्ता दिखाते रहें। आपके ख्याल में समाज में आर्थिक समानता होनी चाहिए। सदा आपने पूंजीवाद व्यवस्था की घोर निंदा करते रहे। उनका मानना यह भी था कि प्रत्येक को श्रम करना चाहिए। आपने अपनी कृतियों द्वारा वर्ण व्यवस्था की कड़ी निंदा की है। उन्होंने सामाजिक दायित्वों को सफलतापूर्वक निभाया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीमती सावित्री। प्रेमचन्द सर्वकालिक युग प्रासांगिकता, का. विवेचनात्मक अध्ययन, 2012, पृ. स. 186।
2. श्रीमती सावित्री। प्रेमचन्द सर्वकालिक युग प्रासांगिकता, 2012, पृ.स. 187
3. प्रेमचंद–हिन्दी साहित्य।
4. प्रेमचंद, मुंशी प्रेमचंद की 101 मार्मिक कहानियां–मानसरोवर भाग–1, पृ.सं. 92 प्रकाशन–राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी, दिल्ली मुद्रण, 2015।
5. प्रेमचंद, मुंशी प्रेमचंद की 101 मार्मिक कहानियां–मानसरोवर भाग–1, 2015, पृ.सं. 94 प्रकाशन–राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी, दिल्ली मुद्रण।
6. प्रेमचंद, मुंशी प्रेमचंद की 101 मार्मिक कहानियां मानसरोवर भाग–3 पृ. सं. 41 प्रकाशन–राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी, दिल्ली मुद्रण, 2015,।
7. प्रेमचंद, मुंशी प्रेमचंद की 101 मार्मिक कहानियां मानसरोवर भाग–3 पृ. सं. 42 प्रकाशन–राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी, दिल्ली मुद्रण, 2015।
8. प्रेमचंद, मुंशी। प्रेमचंद की 101 मार्मिक कहानियां, मानसरोवर भाग–5 पृ.सं. 47 प्रकाशन–राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी दिल्ली मुद्रण, 2015।
9. प्रेमचंद, मुंशी प्रेमचंद की 101 मार्मिक कहानियां, मानसरोवर भाग–5 पृ.सं. 48 प्रकाशन–राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी दिल्ली मुद्रण, 2015।
10. प्रेमचंद, मुंशी प्रेमचंद की 101 मार्मिक कहानियां मानसरोवर भाग–1 पृ.सं. 64 प्रकाशन–राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी दिल्ली।